पाठ-8

क्षेत्रीय आकांक्षाए

9/11/2022

Page No.:
Date: / /

(1.) क्षेत्र और राष्ट्र :—

⇒ सन् 1980 के दशक की स्वायत्तता की माँग के दशक के रूप में देखा जा सकता है। इस दौर में देश के कई भागो से स्वायत्तता की माँग उठी और इसने संवैधानिक नियमों का उल्लंघन करते हुए हथियार तक उठाए।

⇒ भारत सरकार ने लोगो की माँगो को दबाने के लिए जवाबी कार्यवाही की थी।

(i) भारत सरकार का नज़रिया :—

⇒ भारत ने विविधता के प्रश्न पर लोकतांत्रिक दृष्टिकोण अपनाया। लोकतंत्र में क्षेत्रीय आकांक्षाओ की राजनीतिक अभिव्यक्ति की अनुमति है और लोकतंत्र क्षेत्रीयता को राष्ट्र-विरोधी नही मानता।

⇒ इसके अतिरिक्त लोकतांत्रिक राजनीति में इस बात के भी पूरे अवसर होते है कि विभिन्न दल व समूह क्षेत्रीय पहचान आकांक्षा या किसी विशेष क्षेत्रीय समस्या को आधार बनाकर लोगों की भावनाओं का नेतृत्व करें।

(ii) तनाव के दायरें :—

⇒ स्वतंत्रता के तुरंत बाद जम्मू-कश्मीर का मसला सामने आया। यह केवल भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष का मसला नही था। कश्मीर घाटी के लोगों की राजनीति आकांक्षाओं का भी सवाल इससे जुड़ा हुआ था।

⇒ ठीक इसी प्रकार पूर्वोत्तर के नागालैण्ड में और फिर मिजोरम में भारत से अलग होने की माँग करते हुए जोरदार आंदोलन चले।

⇒ भाषा के आधार पर राज्यों की गठन की माँग वाले राज्य :— आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, और गुजरात ऐसे ही आंदोलन थे।

⇒ तमिलनाडु में हिन्दी को राजभाषा बनाने के विरोध में आंदोलन हुआ।

⇒ सन् 1950 के दशक के उत्तरार्द्ध से पंजाबी भाषी लोगों ने अपने लिए एक अलग राज्य बनाने की आवाज उठानी प्रारम्भ कर दी। आखिरकार सन् 1966 में पंजाब और हरियाणा नाम से राज्य बनाए गए।

⇒ बाद में छत्तीसगढ़, झारखंड, और उत्तराचल (उत्तराखंड) का गठन हुआ।

(2.) जम्मू एवं कश्मीर :—

⇒ जम्मू एवं कश्मीर में जारी हिंसा के परिणामस्वरूप अनेक लोगों की जाने गई और कई परिवारों का विस्थापन हुआ। जम्मू और कश्मीर में तीन राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र शामिल है - जम्मू, कश्मीर और लद्दाख।

(i) समस्या की जड़े :—

⇒ सन् 1947 से पहले जम्मू एवं कश्मीर में राजशाही थी। इसके हिन्दू शासक हरिसिंह भारत में शामिल होना नही चाहते थे। उन्होंने अपने स्वतंत्र राज्य के लिए भारत

और पाकिस्तान के साथ समझौता करने की कोशिश की।

⇒ राज्य में नेशनल कांफ्रेंस के शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में जन आंदोलन चला।

⇒ अक्टूबर 1947 में पाकिस्तान ने कबायली घुसपैठियों को अपनी तरफ से कश्मीर पर कब्जा करने भेजा। ऐसे में कश्मीर के महाराजा भारतीय सेना से सहायता माँगने को मजबूर हुए।

⇒ भारत जम्मू एवं कश्मीर की स्वायत्तता को बरकरार रखने पर सहमत हो गया। इसे संविधान में धारा 370 का प्रावधान करके संवैधानिक दर्जा दिया गया। उस समय से जम्मू-कश्मीर की राजनीति सदैव विवादग्रस्त एवं संघर्षयुक्त रही।

(ii) आंतरिक और बाहरी झगड़े :—

⇒ धारा 370 के अंतर्गत जम्मू एवं कश्मीर को भारत के अन्य राज्यों के मुकाबले ज्यादा स्वायत्तता दी गई है। जम्मू-कश्मीर राज्य का अपना संविधान है।

⇒ भारतीय संविधान की सारी व्यवस्थाएँ इस राज्य में लागू नहीं होती। संसद द्वारा पारित कानून राज्य में उसकी सहमति के बाद ही लागू हो सकते है।

⇒ जम्मू और कश्मीर की राजनीति बाहरी और आंतरिक दोनों कारणों से विवादास्पद और द्वंद-पूर्ण बनी रही।

(iii) 1948 से राजनीति :—

⇒ जम्मू-कश्मीर राज्य के प्रधानमंत्री का पद सँभालने के बाद शेख अब्दुल्ला ने भूमि सुधार की बड़ी मुहिम चलाई।

PANKAJ
Page No.:
Date : / /

⇒ उन्होंने इसके साथ-साथ जन-कल्याण की कुछ नीतियाँ भी लागू की। इन सबसे यहाँ की जनता को लाभ हुआ

⇒ सन् 1953 से लेकर 1974 के बीच अधिकांश समय राज्य की राजनीति पर कांग्रेस का प्रभाव रहा। कमजोर हो चुकी नेशनल कांफ्रेंस (शेख अब्दुल्ला के बिना) कांग्रेस के समर्थन से राज्य में कुछ समय तक सत्तासीन रही लेकिन बाद में वह कांग्रेस से मिल गई।

⇒ सन् 1974 में इंदिरा गांधी के साथ शेख अब्दुल्ला ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए और वे राज्य के मुख्यमंत्री बने। उन्होंने नेशनल कांफ्रेंस को फिर से खड़ा किया और सन् 1977 के राज्य विधानसभा के चुनाव में बहुमत से निर्वाचित हुए।

⇒ सन् 1982 में शेख अब्दुल्ला की मृत्यु हो गई और नेशनल कांफ्रेंस के नेतृत्व की कमान उनके पुत्र फारूख अब्दुल्ला ने संभाली।

(iv) सशस्त्र विद्रोह और उसके बाद :—

⇒ जम्मू कश्मीर मे सन् 1987 ई. के विधानसभा चुनाव के पश्चात फारूख अब्दुल्ला मुख्यमंत्री बने।

⇒ सन् 1989 तक जम्मू-कश्मीर राज्य उग्रवादी आंदोलनो की गिरफ्त मे आ चुका था। इस आंदोलन में लोगों को अलग कश्मीर राष्ट्र के नाम पर लामबंद किया जा रहा था। उग्रवादियों को पाकिस्तान ने नैतिक, भौतिक और सैन्य सहायता दी। कई वर्षों तक इस राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू रहा।

⇒ 1990 से पूरा समय, जम्मू और कश्मीर ने विद्रोहियों के हाथों और सेना की कारवाई से असाधारण हिंसा को झेला।

⇒ अवधि के अंत में 2002 में जम्मू और कश्मीर राज्य में चुनाव हुए। नेशनल कांफ्रेंस बहुमत प्राप्त करने में विफल रही और इसके स्थान पर पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) और कांग्रेस की मिली-जुली सरकार बनी।

(V) 2002 और इससे आगे :—

⇒ संविधान के अनुसार मुफ्ती मोहम्मद (पीडीपी) पहले तीन वर्ष सरकार के मुखिया रहे, जिनके बाद गुलामनबी आज़ाद (कॉंग्रेस) के मुखिया बने जो जुलाई 2008 में लागू राष्ट्रपति शासन के कारण अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाए।

⇒ 2008 के चुनाव में (नेशनल कॉन्फ्रेंस और कॉंग्रेस) की मिली-जुली सरकार बनी।

⇒ 2014 में फिर चुनाव हुए पीडीपी के मुफ्ती मोहम्मद सईद के नेतृत्व में बीजेपी के साथ एक मिली-जुली सरकार सत्ता में आई।

⇒ मुफ्ती मोहम्मद सईद के निधन के बाद, उनकी बेटी महबूबा मुफ्ती अप्रैल 2016 में राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री बनी।

⇒ जून 2018 में बीजेपी द्वारा मुफ्ती सरकार को दिया गया समर्थन वापस लेकर राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया।